केरल का इतिहास सभ्यता एवं साहित्य : एक स्त्री परिप्रेक्ष्य

मृदुल सी मृणाल,
सहायक आचार्य, अंग्रेजी विभाग,
एम–ई–एसकेवीयम कालेज, वलांजेरी, मलप्पुरमजिल्ला, केरल,

विश्व के अतिप्राचीन सभ्यताओं में से एक है भारतीय सभ्यता। प्राचीनकाल के हर सभ्यताओं के विकास किसी एक नदी तट पर हुआ है। जैसे मिस्र के सभ्यता नील नदी के किनारे पर जन्म लिया। मोसप्पोट्टोमिय सभ्यता का यूफ्रट्टीस एवं टैग्रीस नदी तटों, पुरानी चीनी सभ्यता का होवांगहो नदी तट पर उदय हुआ। सिंधु घाटी सभ्यता ने पुण्य नदी सिंधु के तट पर जन्म लिया। पुराने मनुष्य शिकार इकट्ठा करने वाले थे।इस चरण के बाद मनुष्य ने एक स्थान पर स्थायी रूप से रहना शुरू किया। करीब इस समय वे खेती भी करना शुरु किया। मार्क्सवादी दर्शन के प्रकार मनुष्य समाज छह चरणों से गुजरे है। इन में आदिम साम्यवाद, गुलामी, सामंतवाद, पूंजीवाद, समाजवाद और साम्यवाद शामिल हैं।इन चरणों में लैंगिक भेदभाव पूर्ण रूप से मिलते हैं। इतिहास केवल पितृसत्तात्मकता के उत्पन्न के रूप में जाना जाता है। इतिहास के रचना में पक्षपात, एक लैंगिक परिपेक्ष्य में प्रत्यक्ष से मिल सकता है। मनुष्य ने सामाजिक विकास के तौर पर भाषा, विश्वास, खाना, परिधान, रीति–रिवाज आदि का निर्माण किया। पुरुष और स्त्री में भेदभाव इस चरण में अधिक हो गया। समाज में पुरुष ने अपने शारीरिक क्षमता के कारण प्रथम स्थान प्राप्त किया। यह स्त्री को अपने प्राधिकार के अन्दर लाने में उनको ताकत दिया। प्राचीन काल के अध्ययनों को आधुनिक काल के सामाजिक मूल्यों के साथ तुलना करना मुश्किल है। कालानुक्रमिक परिवर्तन अध्ययन के सभी क्षेत्रों में होते हैं। सामाजिक अध्ययनों में इस घटना को कोई महत्त्व नहीं दिये थे।

भारत के हिसाब से इतिहास और सभ्यता, दोनों बुनियादी तौर पर पितृसत्तात्मक है। कुछ विषय भारत के सामाजिक व्यवस्था के